RESEARCH EXPRESSION ISSN 2456-3455 Vol. 1, Issue 1, September 2016

हिंदी माध्यम शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता : एक मूल्यांकन

हेमलता बोरकर वासनिक

समाजशास्त्र अध्ययनशाला, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांशः

भारत में शिक्षा प्रदान करने का माध्यम मुख्य रूप से हिन्दी है। विशेष रूप से हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अंग्रेजी को लेकर विद्यार्थियों में ज्ञानार्जन के प्रति सीखने की क्षमता में कमी दिखाई देती है। इसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में प्रदत्त जानकारी का हिन्दी भाषा में उपलब्ध होना है। ग्रामीण अंचलों में अंग्रेजी भाषा में सीखने की बात बहुत दूर है क्योंकि वहाँ शिक्षा और पाठ्य सामग्री हिन्दी में ज्यादा उपलब्ध है। शिक्षक भी भाषा को लेकर कहीं न कहीं अपने दायरे में कैद होते हैं। जिससे अंग्रेजी भाषा से उनका परिचय हो नहीं पाता है और यह भाषा भी उन्हें कठिन मालूम होती है। ऐसी स्थिति में आज के परिवेश में यह आवश्यक है कि हिन्दी माध्यम शिक्षा पद्धति में कुछ सुधार हो और कुछ अंग्रेजी भाषा में सरलता और सहजता हो ताकि सुदूर क्षेत्रों में विद्यार्थियों में शिक्षण पद्धति के प्रति जागरूकता पैदा हो। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं बिन्दुओं पर केन्द्रित है।

बीज शब्द–नवाचार, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा

भूमिका

भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा का प्राथमिक माध्यम अंग्रेजी है, इसके लिए कई कारण हैं. किताबें अंग्रेजी में लिखी गई हैं और कंप्यूटर में अंग्रेजी का उपयोग होता है। कोई व्यक्ति यदि उच्च शिक्षा विदेश से प्राप्त करना चाहते हैं तो अंग्रेजी का ज्ञान होना अनिवार्य हो जाता है । यहाँ के अधिकतर छात्र अपनी प्राथमिक और सेकेंडरी शिक्षा अपनी मातृभाषा (या हिंदी) में प्राप्त करते हैं । छत्तीसगढ़ की 31% आबादी जनजातीय है तथा 76% आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है. 98% स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी है। ऐसे में हिन्दी माध्यम के छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम भाषा की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्धयन में हिन्दी माध्यम के छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने की चुनौतियों का सामना करने के नए तरीकों पर विचार गया है।

Corresponding Author: Email: hemlataborkar@gmail.com
Mobile No. 9424213752

शोध प्रारूप

विवरणात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है। सम्पूर्ण अध्ययन द्वितीयक तथ्यों (सेकेंडरी डेटा) पर आधारित है।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है।

स्कूलों में शिक्षा का माध्यम : एक आंकलन– निम्न तालिका भारत में स्कूलों में शिक्षा के लिए प्रयुक्त माध्यम के अनुसार स्कूलों की संख्या की जानकारी देता है –

तालिका क्रमाक 1 माध्यम के अनुसार स्कूलों की संख्या (भारत)

Medium of Instruction	Number of Schools						
	All	Rural	Urban	Primary	Upper Primary	Second-ary	Higher Second-ary
Hindi	397,884	334,832	63,052	324,301	60,206	8,268	5,109
English	110,424	81,904	28,520	77,319	20,722	7,215	5,168
Others	98,763	83,011	15,752	79,395	15,596	2,951	821
Telugu	72,011	64,557	7,454	57,838	13,728	416	29
Marathi	62,839	54,821	8,018	39,070	23,385	351	33
Bengali	56,708	49,247	7,461	55,141	799	494	274
Kannada	45,804	38,842	6,962	23,926	21,050	732	96
Oriya	42,979	40,104	2,875	36,292	6,423	247	17
Tamil	39,992	30,746	9,246	32,420	6,491	645	436
Gujarati	36,609	29,948	6,661	7,238	29,339	16	16
Assamese	23,975	22,927	1,048	23,186	751	30	8

आरेख 1 माध्यम की भाषा के अनुसार स्कूलों का प्रतिशत

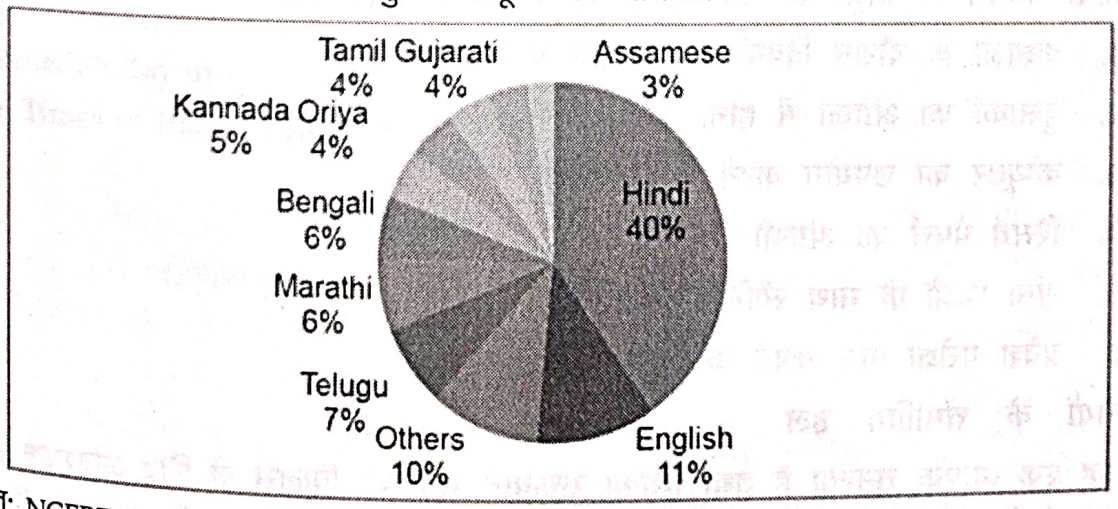

स्रोत: NCERT

तालिका क्रमांक 2 माध्यम के अनुसार स्कूलों की संख्या (छत्तीसगढ़)

Medium of Instruction	Number of Schools						
	All	Rural	Urban	Primary	Upper Primary	Secondary	Higher Secondary
Hindi	25,174	23,045	2,129	23,840	899	193	242
Other	463	135	328	166	122	45	130

ओरख 2 स्तर के अनुसार अंग्रेजी स्कूलों का प्रतिशत

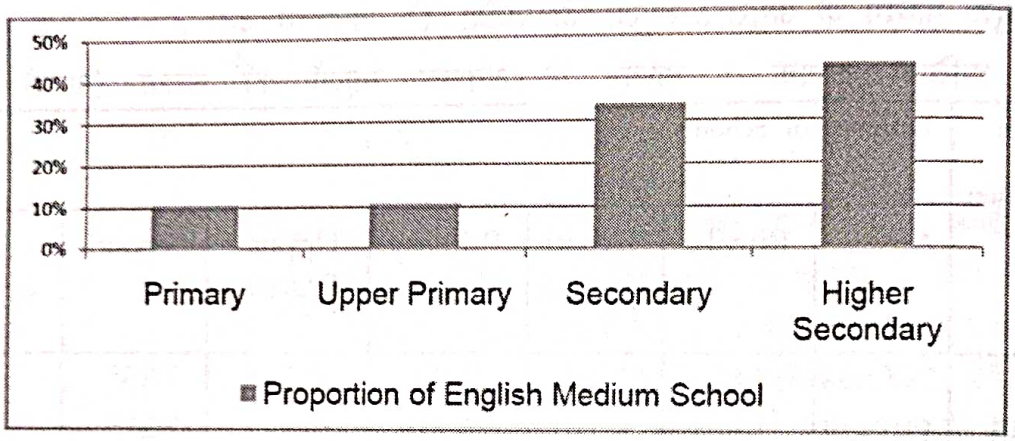

इस तालिका से दो बातें समझ में आती हैं:–

1. ओरख 1 के अनुसार, अपेक्षा के अंनुरूप हिंदी भारत के 40% स्कूलों में इस्तेमाल की जा रही है। तालिका क्रमांक 2 के अनुसार की 98% स्कूलों में शिक्षा का माध्यम हिंदी है।
2. ओरख 2 के अनुसार, एक महत्वपूर्ण पहलू जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए वह यह है कि जैसे–जैसे हम प्राथमिक से सेकेंडरी स्कूलों की ओर जाते हैं अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की संख्या में लगातार वृद्धि दिखाई देती है। उच्च शिक्षा की ओर जाने से यह प्रवृत्ति और अधिक दिखाई देती है। उदाहरणस्वरूप, व्यावसायिक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम में ही उपलब्ध है। प्रतिष्ठित IIT और IIM संस्थानों में शिक्षा अंग्रेजी में ही होती है।

हिंदी माध्यम के छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में चुनौतियाँ

1. कक्षाओं के दौरान विषयों को समझने में असमर्थता
2. पुस्तकों का अंग्रेजी में होना
3. कंप्यूटर का उपयोग करने में असमर्थता
4. रिसर्च पेपर्स का अंग्रेजी में होना
5. अन्य छात्रों के साथ सीमित सहभागिता
6. प्रवेश परीक्षा पास करने की चुनौती

चुनौतियों के संभावित हल

यह एक व्यापक समस्या है तथा इसका समाधान समावेशी विकास के लिए आवश्यक है। इस मुद्दे से निपटने का एकमात्र पारंपरिक तरीका छात्रों को अंग्रेजी भाषा की अलग से शिक्षा

देने का है। लेखक के व्यक्तिगत अनुभव में ऐसे कोर्सेज का प्रभाव सिर्फ सतही होता है । बहुत से छात्र पहले भी अंग्रेजी को एक विषय की तरह स्कूल में पढ़ चुके होते हैं परन्तु इससे उनकी अंग्रेजी की समझ विकसित नहीं हो पाती। ऐसे में एक और कोर्स करा देने से सुधार की अपेक्षा करना ठीक नहीं है।

बहुत सारे हल दिखाई देते हैं जिनका कार्यान्वयन चुनौतीपूर्ण है

1. हिंदी किताबों की गुणवत्ता के मापदंड तैयार किये जाने चाहिएँ। पारिभाषिक शब्दो के लिए अंग्रेजी भाषा का उपयोग सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
2. अंग्रेजी के किताबों का हिंदी अनुवादित संस्करण उपलब्ध होना चाहिए।
3. जहाँ जरूरी हो वहाँ लेक्चर विडियो रिकार्डेड होने चाहिएँ। इन रिकार्डेड वीडियोज को हिंदी सब–टाइटल के साथ छात्रों को उपलब्ध किया जा सकता है ।

आज का युग सूचना तकनीकी में क्रांति का युग है। तकनीक में हुए विकास ने नए दरवाजे खोले हैं जिनका उपयोग इन समाधान के कार्यान्वयन में हो सकता है।

1. क्राउड सोर्सिंग (crowd sourcing): अंग्रेजी और हिंदी, दोनों भाषा के जानकार बहुत से लोग हैं। इन्हें संगठित कर अनुवाद का बहुत सा काम किया जा सकता है। विकिपीडिया क्राउड सोर्सिंग का एक अति उत्तम उदाहरण है।
2. बहुत सारे ऑनलाइन टूल्स उपलब्ध हैं जो अंग्रेजी वाक्यों का हिंदी अनुवाद करा सकते हैं। उदाहरणस्वरूप, गूगल ट्रांसलेटर ।

निष्कर्ष

इस विषय पर और अधिक शोध होने की आवश्यकता है। बहुत से सुझाये गए उपाय उपन्यासों और फिल्मों में पहले ही उपयोग में लाये जा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में इसका उपयोग काफी महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

संदर्भ सूची

Highlights on Media of Instruction and Languages Taught, NCERT http://www.ncert.nic.in/programmes/education_survey/pdfs/Mediaof_intruction.pdf

http://hiwikipedia.org.in

www.edutoday.in

The Times of India, 3 July 2011.